रीतिकालीन परिवेश और बिहारी का काव्य

(डॉ सरिता)

हिंदी साहित्य के इतिहास में सम्वत १७०० से १९०० तक के काल को रीतिकाल के नाम से जाना जाता है। रीतिकालीन अधिकांश साहित्य राज्याश्रय में लिखा गया दरबारी साहित्य है जिसकी रचना सामंतीय वातावरण मे हुई | इन कवियों की वाणी में सूर और तुलसी जैसी उदात्त चेतना और तन्मयता नहीं है और न ही सामान्य जन की यथार्थ अभिव्यक्ति इनके काव्य का लक्ष्य थी | इनकी समस्त अंतश्चेतना सुरा और सुंदरी तक सीमित थी । रीतिकालीन कवियों ने राधा ओर कृष्ण की आड़ में श्रृंगारिक प्रवृति को अभिव्यक्त किया है | ये कवि राजभक्ति को ही अपना लक्ष्य समझते रहे |।इसी कारण राज्याश्रित कवि अपनी समस्त शक्ति आश्रयदाता को चमत्कारिक शैली से प्रभावित करने में लगाते रहते थे। कवि कर्म और सहित्य की उपयोगिता को दरकिनार करने वाले ये कवि रीति? का अतिक्रमण करने का साहस नहीं रखते थे , यही कारण है कि आधुनिक आलोचकों ने इस साहित्य की उपयोगिता पर प्रश्न चिन्ह लगाया है। रीतिकालीन कवियों ने रचनात्मक साहित्य की उपेक्षा संस्कृत साहित्य की परम्परा पर लक्षण ग्रंथों का निर्माण किया | रीतिकाल में श्रृंगार के साथ साथ वीर ,भक्ति और नीति की धारायें भी मित्रती हैं। यदि रीतिकाल को ब्रज का स्वर्ण काल कहा जाये तो अनुचित नहीं होगा | रीतिकालीन कवियों ने ब्रज भाषा में अपनी काव्य रचनाओं का प्रणयन किया तथापि दरबारी प्रभाव के कारण उसमें अरबी फारसी शब्दों का आना स्वभाविक था। छन्द विधान की दृष्टि से कवित्त और सवैयों की प्रधानता है। इनके काव्य में दोहा और कुण्डलिया छन्द का प्रयोग भी मित्रता है।

रीतिकालीन काव्य को समझने के लिए तत्कालीन सामाजिक , राजनैतिक, धार्मिक एवं साहित्यिक परिस्थितियों को जानना आवश्यक है | कवि इसी परिवेश से प्रेरणा प्राप्त कर काव्य रचना करता था । राजनैतिक दृष्टि से यह काल मुगल साम्राज्य के पूर्ण वैभव का काल है । मुगल साम्राज्य के प्रतिष्ठित होने के साथ ही भारतीय सामाजिकजीवन पर इसका प्रभाव परिलक्षित होने लगा था | उसने जिस काव्य संस्कृति और कला को आश्रय दिया उससे भारत की मूल

संस्कृतिक संपदा के विनष्ट होने की संभावना थी | पारम्परिक धर्म पर भी उसने चोट की | अधिकांश मुलिम शासक विलासी थे जिसके फलस्वरूप हिंदू राजाओं में भी विल्रासिता की प्रवृति बढने लगी | सुरा सुंदगी और अन्य विलक्षण सामग्रियों व साधनों से मुगल शासन धीरे धीरे पतन की ओर बढ़ने लगा | मुगलों के शासन काल में सामंतवाद और रजवाड़ों की जड़े मजबूत हो चुकी थी | उनके थोथे अंहकार और पारस्परिक ईष्यी ने अंग्रेजों को भारत में अपनी जड़े जमानेके लिए प्रेरित किया । केंद्रीय शासन नष्ट होने लगा था | औरंगजेब के उत्तराधिकारी विलास में डूबे रहते थे, इस काल के अधिकांश कवि इन्ही विलासी आश्रयदातओं के आश्रय में रह कर श्रृंगार रसमयी कविताओं का सृजन करना अपने जीवन का लक्ष्य मानते थे |

इस काल में समाज की दशा भी अत्यन्त शोचनीय थी। महलों के विलासमय जीवन का प्रभाव जनसामान्य पर पड़ा | विल्रासिता को ही जीवन मूल्य मान लेने के फलस्वरूप जीवन के उच्चतर मूल्य का हास होने लगा | जाति-पाति , बालर-विवाह तथा स्त्री प्रथा जैसी अनेक कुप्रथाएं समाज में व्याप्त थी । 'स्त्री! विल्ास का साधनमाने जाने वाली वस्तु के रूप में सुशोभित थी | इस काल में निम्न वर्ग, कृषक, मजदूर, कारीगर सदा की भांति उपेक्षित था इनकी दशा अत्यंत खराब थी ।

धार्मिक दृष्टि से हासोन्मुख रीतिकाल में विलासिता , अंधविश्वास, रूढ़ियों और आडम्बरों का प्राधान्य था | वैष्णव धर्म में राम तथा कृष्ण भक्ति में विल्लासिता का भाव आ जाने के कारण कामुकता की अभिव्यक्ति खुल कर हुई | मुसलमानों ने जिस काव्य संस्कृति और कला को आश्रय दिया उससे भारत की सांस्कृतिक संपदा विनष्ट होनेके कगार पर थी | इस युग के कवि / साहित्यकार अपने आश्रदाताओं की इच्छानुसार श्रृंगारपरक और चमत्कारपूर्ण कल्रा कौशल के प्रदर्शन में जुट गए | वे कवि कर्म के साथ आचार्य कर्म भी करने लगे , उनकी विलासमयी प्रवृति रीति ग्रंथों में भी दृष्टिगत होती है | इस प्रकार रीतिकालीन काव्य दायित्वहीनता का ऐसा काव्यात्मक प्रयास है जिसमें मौलिकता और नैतिकता का सर्वत्र अभाव मिलता है। इस प्रकार की

हासमयी परिस्थितियों में ही रीतिकालीन साहित्य का प्रणयन हुआ। रीतिकालीन कवियों के काव्य

का वर्ण्य-विषय उनके परिवेश से ही प्रेरित था । रीतिसिद्ध काव्य वह काव्य है जिसमें कवियों ने काव्यशास्त्रीय मानदण्डों का निर्वाह तो किया किंतु उन्होंने लक्षण ग्रंथों के स्थान पर केवल लक्षणों के उदाहरण स्वरूप कविताओं का सृजन किया। रीतिसिद्ध कवि मध्यमार्गी थे। ये न तो रीति से स्वयं को पूर्ण रूप से मुक्त कर पाये और न ही रीति का अतिक्रमण कर सके। इनकी रीति की बंधी परिपाटी में आस्था तो पूरी थी परंतु ये उसका गुलाम होकर नहीं चलना चाहते थे। इससे दूर हटना भी इन्हे स्वीकार्य न था। इस प्रकार ये रीतिबद्ध और रीतिमुक्त काव्य के बीच की एक कड़ी के रूप में थे। रीति के सम्पूर्ण शास्त्र में ये सिद्ध थे अर्थात रीति के ज्ञाता थे। इन्होंने काव्यशास्त्रीय ज्ञान को अपने मस्तिष्क में रखा और काव्यांग के उदाहरण रूप में रचनाएं लिखी। कृष्ण चंद्र वर्मा रीतिसिद्ध कवियों को रीत्यानुसारी या लक्षणानुसारी कवि कहते हैं। परंतु, रीतिसिद्ध कवि लक्षणों के अनुसार काव्य रचना करने के साथ साथ अपने अनुभवों के आधार पर भी काव्य सृजन करते थे। इन्हे स्वतंत्र काव्य निर्माण की छूट लक्षणग्रंथकारों की अपेक्षा अधिक थी। यही कारण है कि मौलिकता , भावप्रवणता और नवीन कल्पनाओं का समावेश इनके काव्य में देखा जा सकता है। रीतिबद्ध कवियों में पिष्टपेषण की प्रवृति के कारण कला पक्ष प्रधान और भाव पक्ष गोण है। रीतिमुक्त काव्य में भाव पक्ष की प्रधानता हैं और कला पक्ष गौण है। जबकि रीतिसिद्ध काव्य भाव और कला पक्ष का समभाव है। इसलिए कलागत सौष्ठव और भावप्रवणता का समन्वय रीतिसिद्ध कवियों की काव्य सृजन में निपुणता को दर्शाता है। रीतिसिद्ध कवि. बिहारी बिहारी एकमात्र ऐसे रीतिसिद्ध कवि हैं जिनकी प्रसिद्धि और लोकप्रियता आज भी बनी हुई है। महाकवि बिहारी का जन्म सं० १६६० में ग्वालियर के पास बसुआ गोविंदपुर गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम केशवराय था। ये अपनी युवावस्था में मथुरा आकर बस गए। परंतु , बाद में जयपुर के राजा जयसिंह के आश्रय में रहने तगे। राज्याश्रय के दौरान इन्होंने अर्थ के लिए अपने काव्य को बेचा नहीं बल्कि काव्य में उचित उपदेश" को भी ध्यान में रखते हुए जयपुर नरेश को घोर श्रृंगारिकता से उबारा। अतः इनके कव्य में परोक्ष रूप से लोकमंगल की भावना भी विद्यमान थी। राजा जयझसिंह द्वारा हिंदुओं के विरूद्ध लड़ने वाले मुगलों का साथ देने पर बिहारी ने राजा जयसिंह को अन्योक्तिपरक दोहे से शिक्षा भी दी.

बिहारी रचित "बिहारी सतसई" ७०० दोहों का संग्रह है , जिसकी रचना बिहारी ने राजा जयसिंह के दरबार में रहकर की। इस रचना में श्रृंगार के अंग, उपांग, भाव, विभाव. अनुभावों का सूक्ष्म और सुंदर चित्रण मिलता है। इसलिए आलोचकों का यह कथन शत प्रतिशत सही प्रतीत होता है. दोहे जेसे छोटे छन्द में गम्भीर एवं विशद विवेचन ही बिहारी की लोकप्रियता का आधार है। बिहारी का रचना कौशल उनकी सूक्ष्म निरीक्षण काव्य प्रतिभा का परिचायक है। बिहारी की ब्रजभाषा शुद्ध परिष्कृत साहित्यिक भाषा है जिसमें माधुर्य की छटा विद्यमान है। एक-एक शब्द में पूर्णभाव की अभिव्यक्ति द्वारा इन्होंने "गागर में सागर" भरने की कला को चरितार्थ कर दिखाया है। भरे भवन में नैनों द्वारा बात करने का सूक्ष्म एवं मनोहारी चित्रण बिहारी ही कर सकते हैं| बिहारी के अतिरिक्त अन्य रीतिसिद्ध कवियों में रामसहाय दास , नेवाज, पजनेस, रसनिधि आदि का नाम उल्लेखनीय है। डॉ नगेंद्र इन कवियों को 'रीतिबद्ध कवि" की श्रेणी में रखते हैं और लक्षण ग्रंथकारों को वे 'रीति कवि" कहने के पक्ष में हैं। परंतु , रामसहाय दास कृत 'राम सतसई' पजनेस कृत "पजनेस प्रकाश", रसनिधि कृत रतन हजारा" रीतिसिद्ध काव्य की सुंदर रचनाएं हैं। कवि बिहरी जिस रीतिसिद्ध काव्यधारा से सम्बंध रखते थे उस काव्यधारा है में कवियों ने काव्यशास्त्रीय मानदण्डों का निर्वाह तो किया किंतु उन्होंने लक्षण ग्रंथों के स्थान पर केवल लक्षणों के उदाहरण स्वरूप कविताओं का सृजन किया। रीतिसिद्ध कवि मध्यमार्गी थे। ये न तो रीति से स्वयं को पूर्ण

रूप से मुक्त कर पाये और न ही रीति का अतिक्रमण कर सके। इनकी रीति की बंधी परिपाटी में आस्था तो पूरी थी परंतु ये उसका गुलाम होकर नहीं चलना चाहते थे। इससे दूर हटना भी इन्हे स्वीकार्य न था। इस प्रकार ये रीतिबद्ध और रीतिमुक्त काव्य के बीच की एक कड़ी के रूप में थे। रीति के सम्पूर्ण शास्त्र में ये सिद्ध थे अर्थात रीति के ज्ञाता थे। इन्होंने काव्यशास्त्रीय ज्ञान को अपने मस्तिष्क में रखा ओर काव्यांग के उदाहरण रूप में रचनाएं लिखी। कृष्ण चंद्र वर्मा रीतिसिद्ध कवियों को रीत्यानुसारी या लक्षणानुसारी कवि कहते हैं। परंतु , रीतिसिद्ध कवि लक्षणों के अनुसार काव्य रचना करने के साथ साथ अपने अनुभवों के आधार पर भी काव्य सृजन करते थे। इन्हे स्वतंत्र काव्य निर्माण की छूट लक्षणग्रंथकारों की अपेक्षा अधिक थी। यही कारण है कि मौलिकता , भावप्रवणता और नवीन कलल्पनाओं का समावेश इनके काव्य में देखा जा सकता है। रीतिबद्ध कवियों में पिष्टपेषण की प्रवृति के कारण कला पक्ष प्रधान और भाव पक्ष गौण है। रीतिमुक्त काव्य में भाव पक्ष की प्रधानता है और कला पक्ष गोौण है। जबकि रीतिसिद्ध काव्य भाव और कला पक्ष का समभाव है। इसलिए कलागत सौष्ठव और भावप्रवणता का समन्वय रीतिसिद्ध कवियों की काव्य सृजन में निपुणता को दर्शाता है।